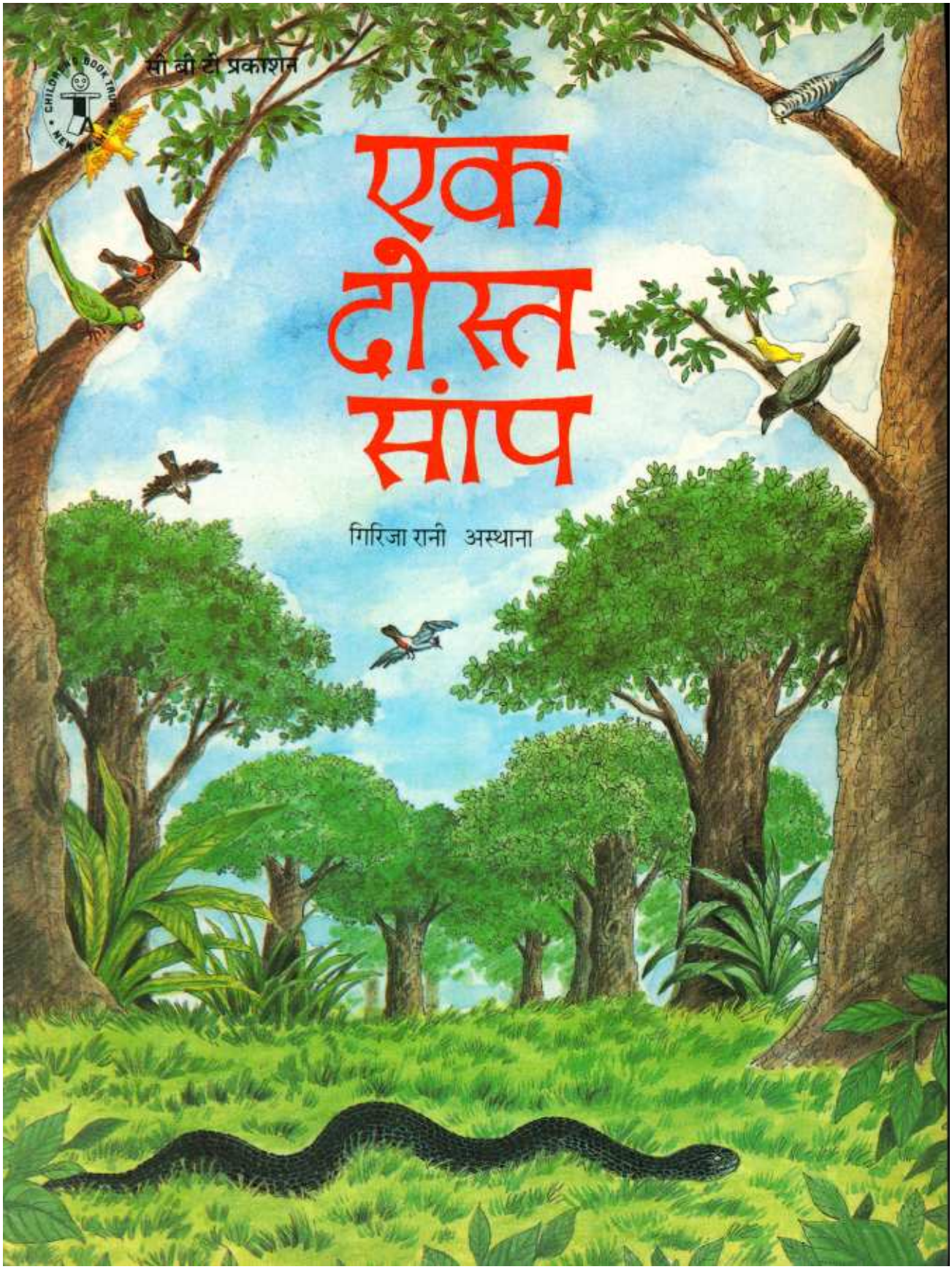
सी बी टी प्रकाशन
एक दोस्त सांप
गिरिजा रानी अस्थाना

# एक दोस्त सांप

लेखिका : गिरिजा रानी अस्थाना
चित्रकार : क्षितीश चटर्जी

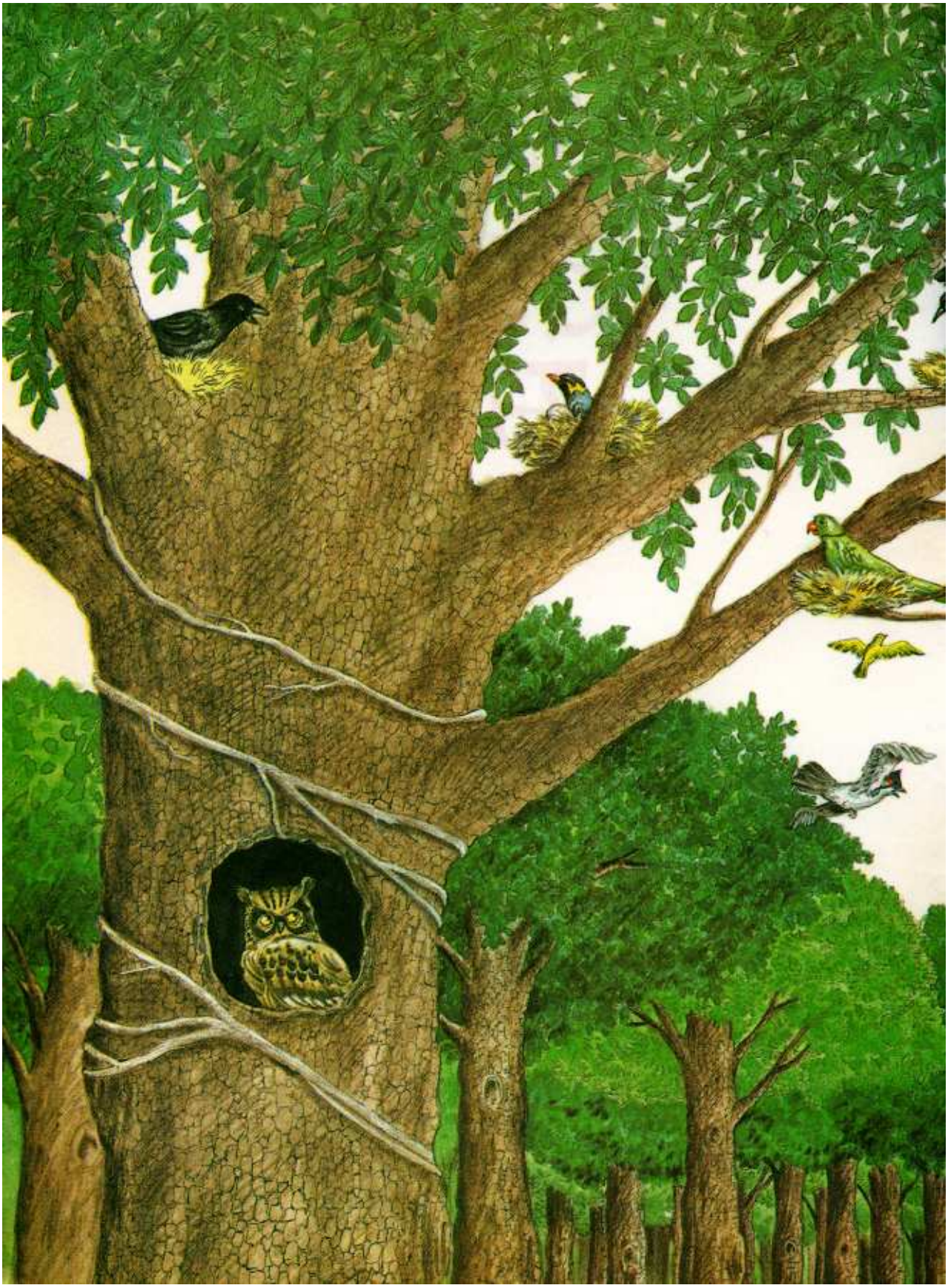

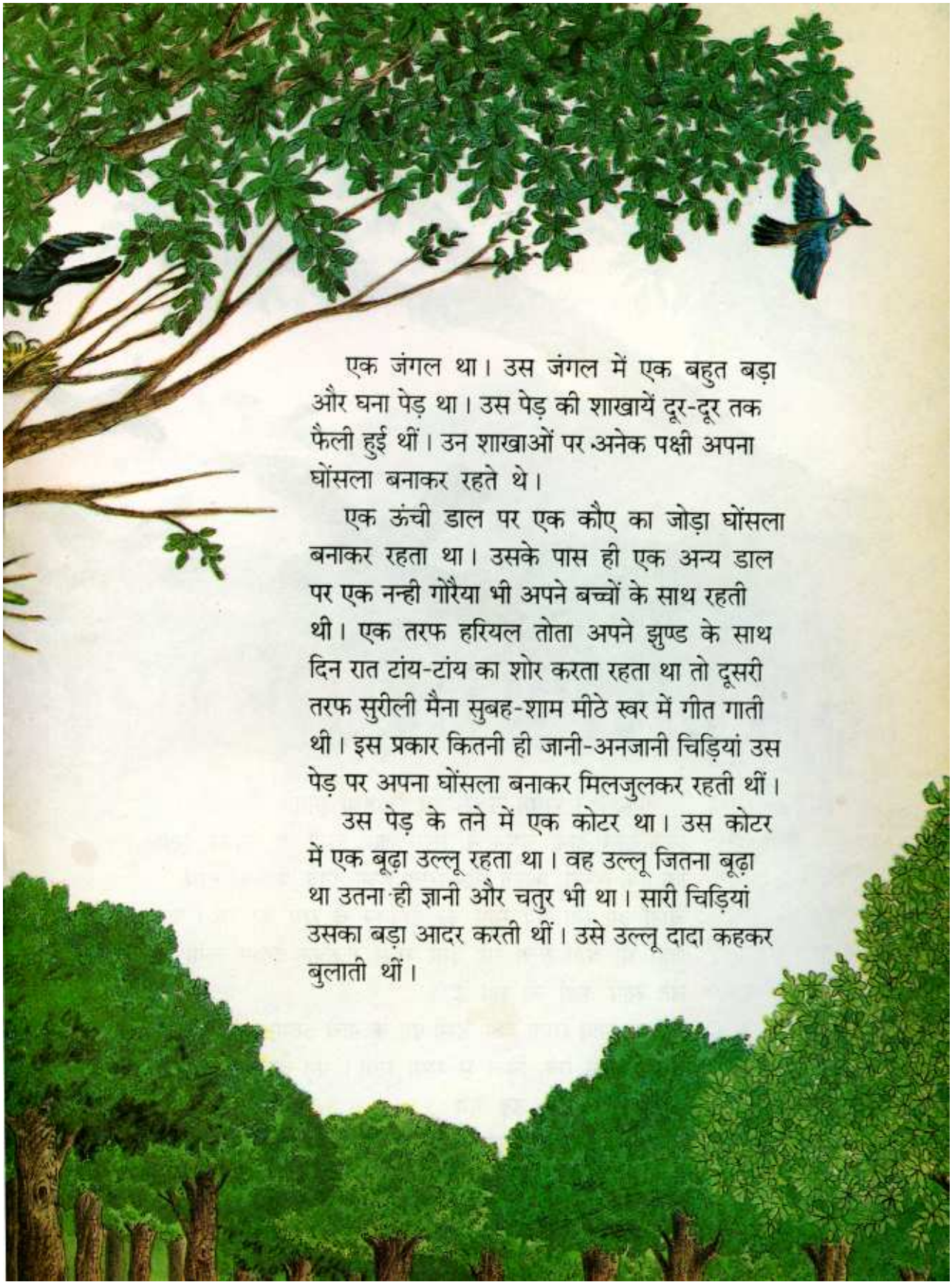

एक जंगल था। उस जंगल में एक बहुत बड़ा और घना पेड़ था। उस पेड़ की शाखायें दूर-दूर तक फैली हुई थीं। उन शाखाओं पर अनेक पक्षी अपना घोंसला बनाकर रहते थे।

एक ऊंची डाल पर एक कौए का जोड़ा घोंसला बनाकर रहता था। उसके पास ही एक अन्य डाल पर एक नन्ही गौरैया भी अपने बच्चों के साथ रहती थी। एक तरफ हरियल तोता अपने झुण्ड के साथ दिन रात टांय-टांय का शोर करता रहता था तो दूसरी तरफ सुरीली मैना सुबह-शाम मीठे स्वर में गीत गाती थी। इस प्रकार कितनी ही जानी-अनजानी चिड़ियां उस पेड़ पर अपना घोंसला बनाकर मिलजुलकर रहती थीं।

उस पेड़ के तने में एक कोटर था। उस कोटर में एक बूढ़ा उल्लू रहता था। वह उल्लू जितना बूढ़ा था उतना ही ज्ञानी और चतुर भी था। सारी चिड़ियां उसका बड़ा आदर करती थीं। उसे उल्लू दादा कहकर बुलाती थीं।

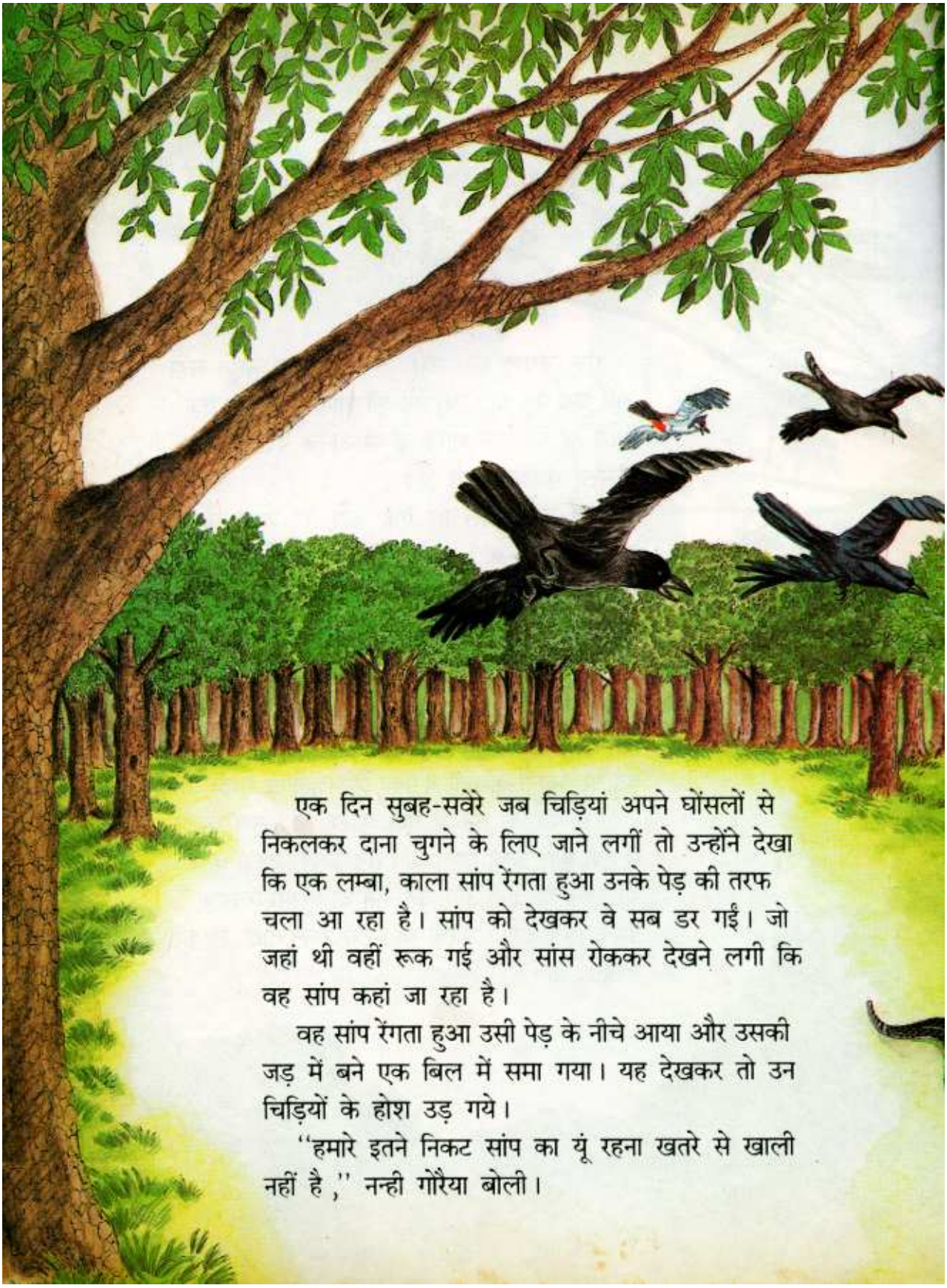

एक दिन सुबह-सवेरे जब चिड़ियां अपने घोंसलों से निकलकर दाना चुगने के लिए जाने लगीं तो उन्होंने देखा कि एक लम्बा, काला सांप रेंगता हुआ उनके पेड़ की तरफ चला आ रहा है। सांप को देखकर वे सब डर गईं। जो जहां थी वहीं रूक गई और सांस रोककर देखने लगी कि वह सांप कहां जा रहा है।

वह सांप रेंगता हुआ उसी पेड़ के नीचे आया और उसकी जड़ में बने एक बिल में समा गया। यह देखकर तो उन चिड़ियों के होश उड़ गये।

"हमारे इतने निकट सांप का यूं रहना खतरे से खाली नहीं है," नन्ही गोरैया बोली।

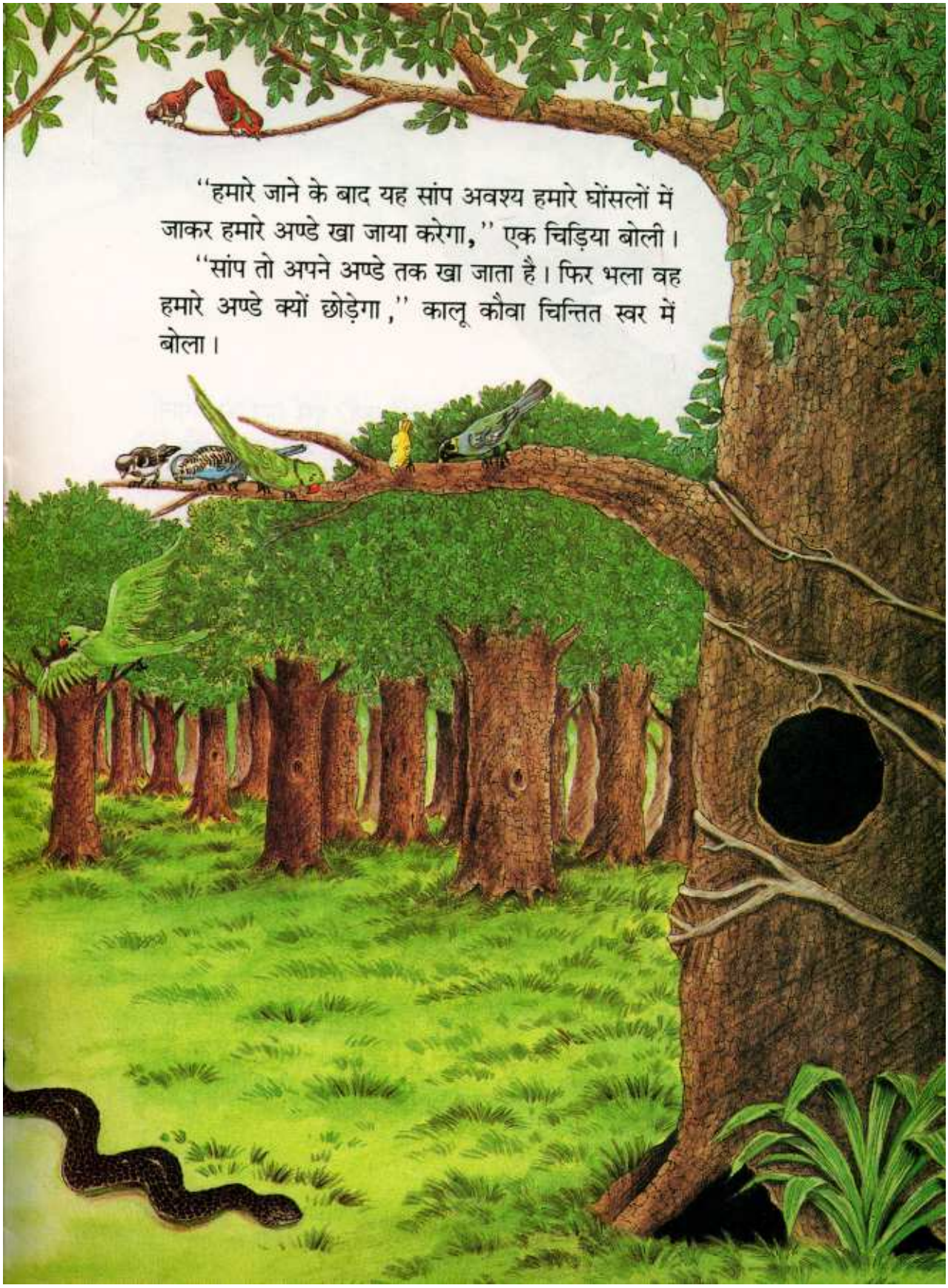

"हमारे जाने के बाद यह सांप अवश्य हमारे घोंसलों में जाकर हमारे अण्डे खा जाया करेगा," एक चिड़िया बोली।

"सांप तो अपने अण्डे तक खा जाता है। फिर भला वह हमारे अण्डे क्यों छोड़ेगा," कालू कौवा चिन्तित स्वर में बोला।

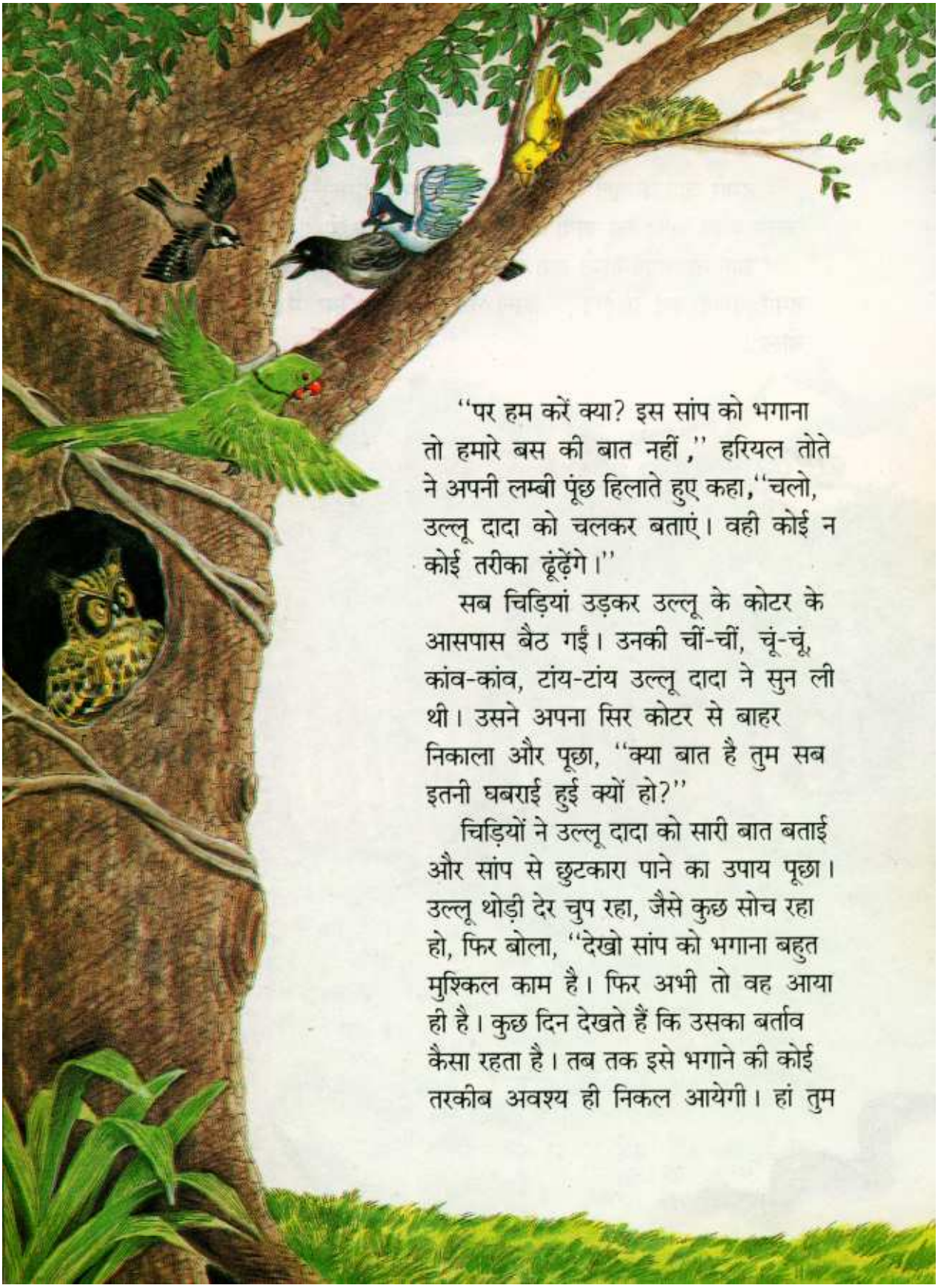

"पर हम करें क्या? इस सांप को भगाना तो हमारे बस की बात नहीं," हरियल तोते ने अपनी लम्बी पूंछ हिलाते हुए कहा, "चलो, उल्लू दादा को चलकर बताएं। वही कोई न कोई तरीका ढूंढ़ेंगे।"

सब चिड़ियां उड़कर उल्लू के कोटर के आसपास बैठ गईं। उनकी चीं-चीं, चूं-चूं, कांव-कांव, टांय-टांय उल्लू दादा ने सुन ली थी। उसने अपना सिर कोटर से बाहर निकाला और पूछा, "क्या बात है तुम सब इतनी घबराई हुई क्यों हो?"

चिड़ियों ने उल्लू दादा को सारी बात बताई और सांप से छुटकारा पाने का उपाय पूछा। उल्लू थोड़ी देर चुप रहा, जैसे कुछ सोच रहा हो, फिर बोला, "देखो सांप को भगाना बहुत मुश्किल काम है। फिर अभी तो वह आया ही है। कुछ दिन देखते हैं कि उसका बर्ताव कैसा रहता है। तब तक इसे भगाने की कोई तरकीब अवश्य ही निकल आयेगी। हां तुम

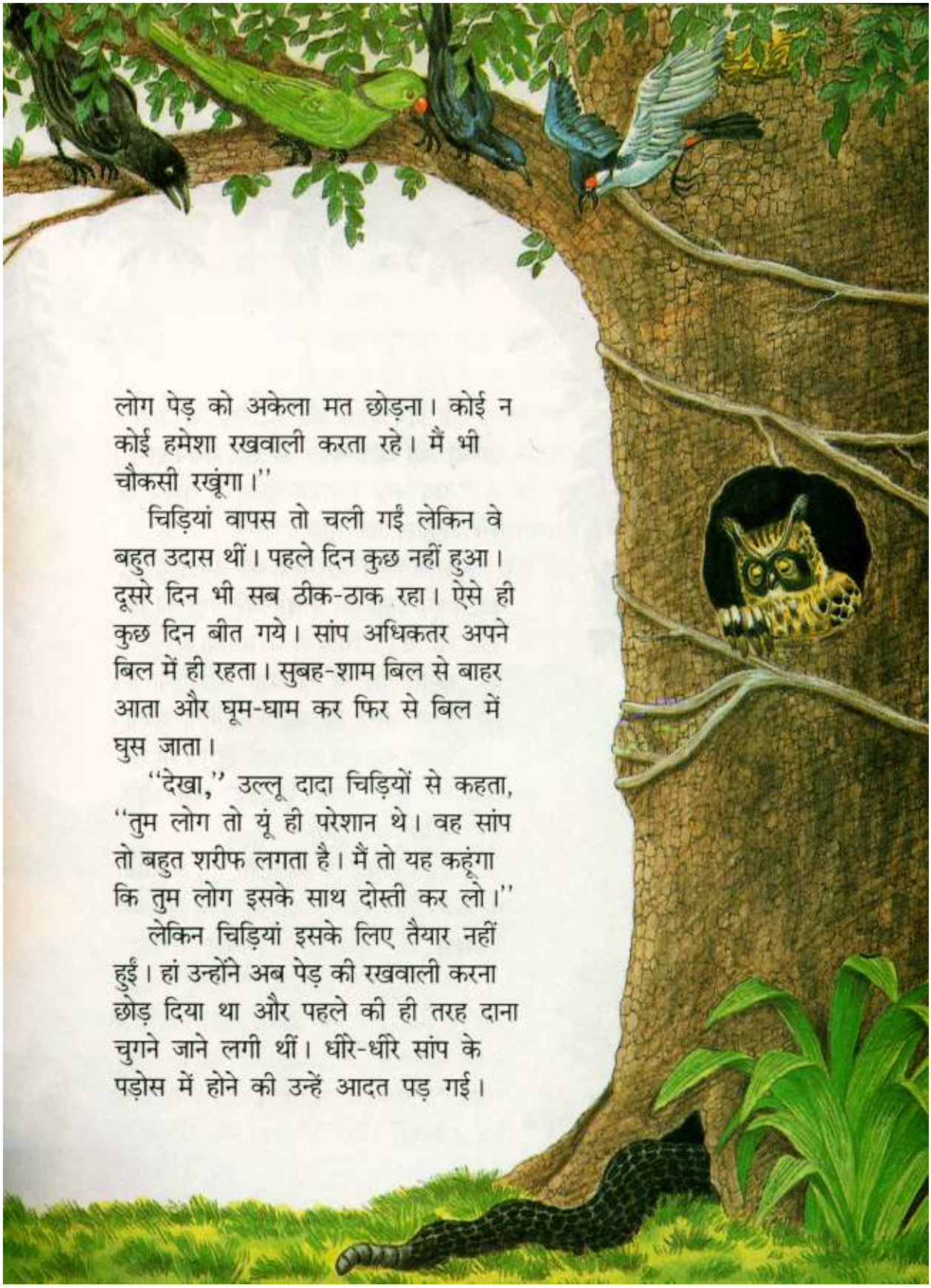

लोग पेड़ को अकेला मत छोड़ना। कोई न कोई हमेशा रखवाली करता रहे। मैं भी चौकसी रखूंगा।''

चिड़ियां वापस तो चली गईं लेकिन वे बहुत उदास थीं। पहले दिन कुछ नहीं हुआ। दूसरे दिन भी सब ठीक-ठाक रहा। ऐसे ही कुछ दिन बीत गये। सांप अधिकतर अपने बिल में ही रहता। सुबह-शाम बिल से बाहर आता और घूम-घाम कर फिर से बिल में घुस जाता।

''देखा,'' उल्लू दादा चिड़ियों से कहता, ''तुम लोग तो यूं ही परेशान थे। वह सांप तो बहुत शरीफ लगता है। मैं तो यह कहूंगा कि तुम लोग इसके साथ दोस्ती कर लो।''

लेकिन चिड़ियां इसके लिए तैयार नहीं हुईं। हां उन्होंने अब पेड़ की रखवाली करना छोड़ दिया था और पहले की ही तरह दाना चुगने जाने लगी थीं। धीरे-धीरे सांप के पड़ोस में होने की उन्हें आदत पड़ गई।

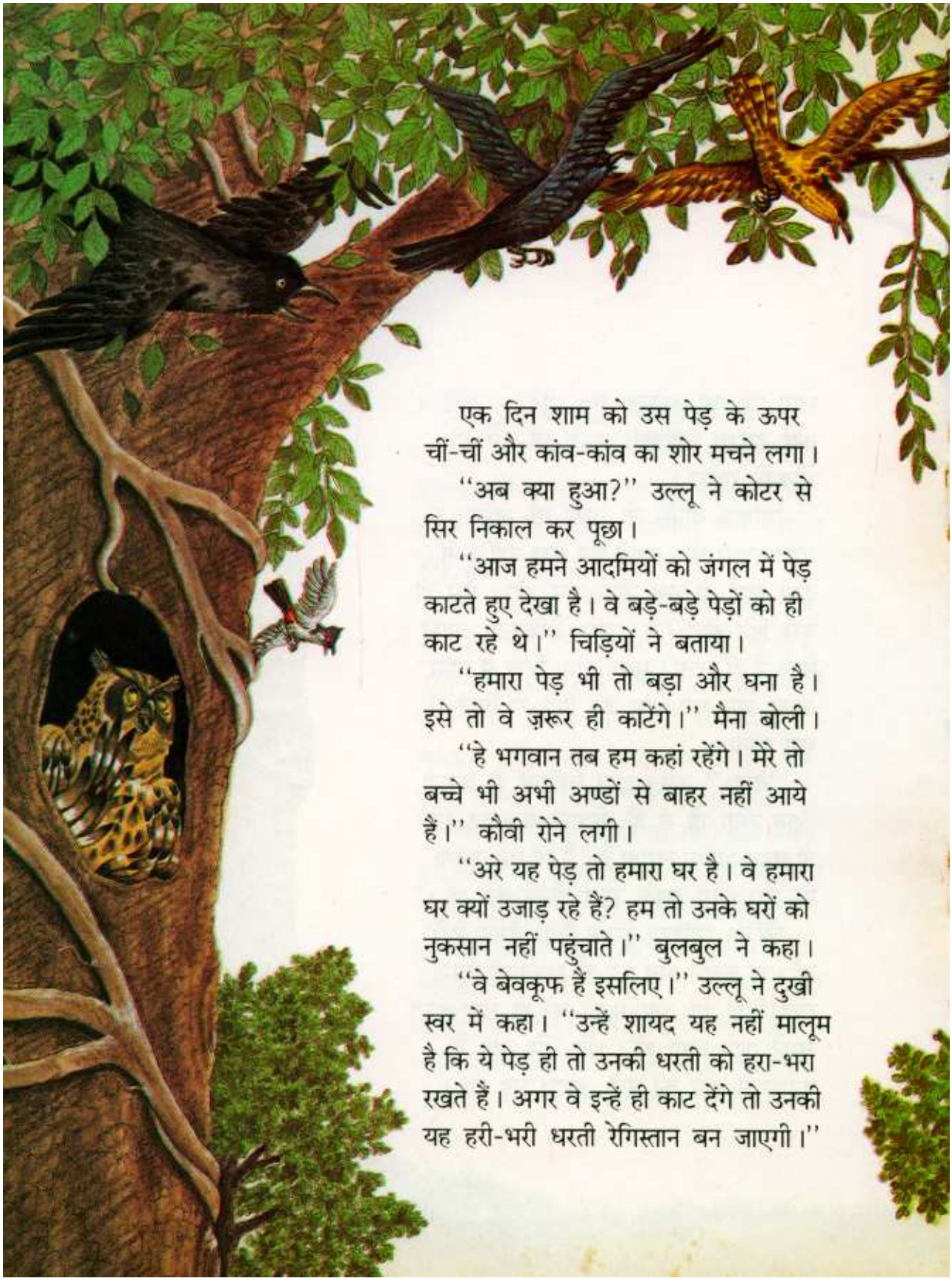

एक दिन शाम को उस पेड़ के ऊपर चीं-चीं और कांव-कांव का शोर मचने लगा।

"अब क्या हुआ?" उल्लू ने कोटर से सिर निकाल कर पूछा।

"आज हमने आदमियों को जंगल में पेड़ काटते हुए देखा है। वे बड़े-बड़े पेड़ों को ही काट रहे थे।" चिड़ियों ने बताया।

"हमारा पेड़ भी तो बड़ा और घना है। इसे तो वे ज़रूर ही काटेंगे।" मैना बोली।

"हे भगवान तब हम कहां रहेंगे। मेरे तो बच्चे भी अभी अण्डों से बाहर नहीं आये हैं।" कौवी रोने लगी।

"अरे यह पेड़ तो हमारा घर है। वे हमारा घर क्यों उजाड़ रहे हैं? हम तो उनके घरों को नुकसान नहीं पहुंचाते।" बुलबुल ने कहा।

"वे बेवकूफ हैं इसलिए।" उल्लू ने दुखी स्वर में कहा। "उन्हें शायद यह नहीं मालूम है कि ये पेड़ ही तो उनकी धरती को हरा-भरा रखते हैं। अगर वे इन्हें ही काट देंगे तो उनकी यह हरी-भरी धरती रेगिस्तान बन जाएगी।"

"अपने किए की सजा तो वे भुगत ही लेंगे लेकिन हम कैसे इस मुसीबत से छुटकारा पाएं," लम्बी पूंछ वाला हरियल तोता बोला, "कल सवेरे तक वे ज़रूर हमारे पेड़ तक पहुंच जाएंगे।"

उल्लू दादा चुपचाप कुछ सोचता रहा। उसे भी इस आफत से बचने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। 'सचमुच अगर यह पेड़ कट गया तो चिड़ियों की यह इतनी बड़ी बिरादरी कहां जाएगी?' उसने सोचा।

लेकिन जब उसे चिड़ियों के उतरे हुए मुंह देखे तो ढांढ़स बंधाता हुआ बोला, "तुम लोग घबराओ नहीं। अपने-अपने घोंसलों में जाओ। कल सुबह तक कोई न कोई उपाय ज़रूर ही निकल आयेगा।"

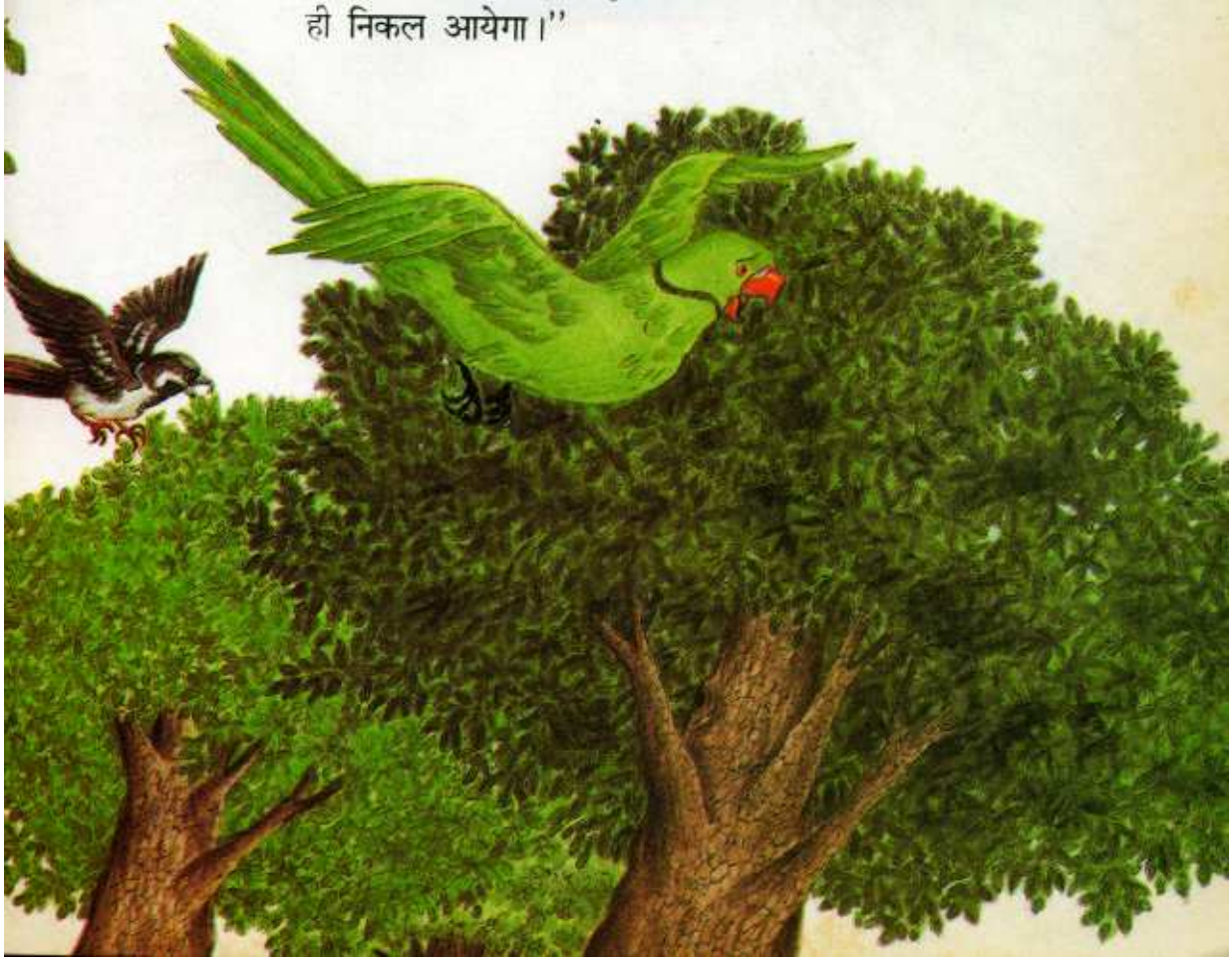

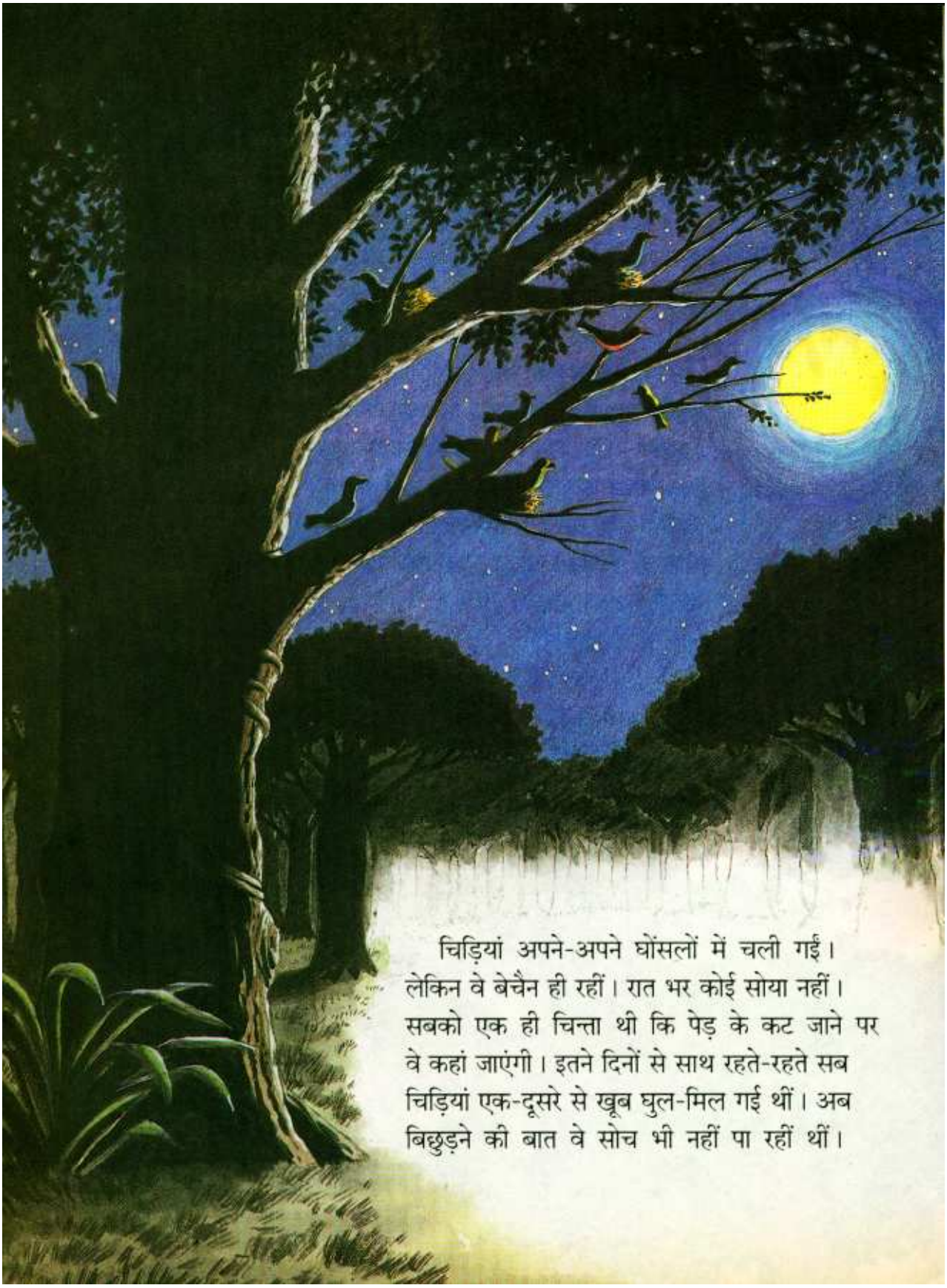

चिड़ियां अपने-अपने घोंसलों में चली गईं। लेकिन वे बेचैन ही रहीं। रात भर कोई सोया नहीं। सबको एक ही चिन्ता थी कि पेड़ के कट जाने पर वे कहां जाएंगी। इतने दिनों से साथ रहते-रहते सब चिड़ियां एक-दूसरे से खूब घुल-मिल गई थीं। अब बिछुड़ने की बात वे सोच भी नहीं पा रहीं थीं।

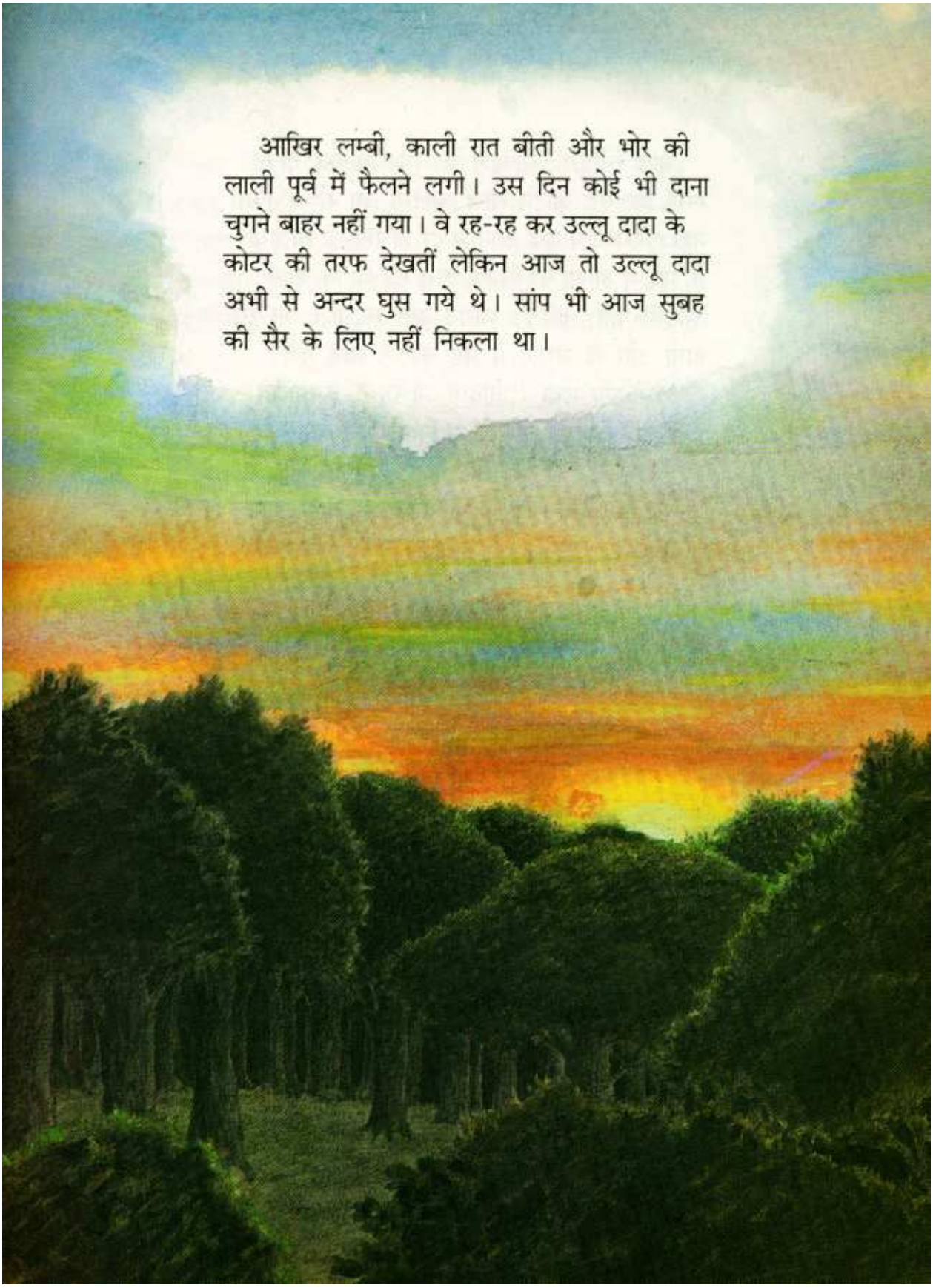

आखिर लम्बी, काली रात बीती और भोर की लाली पूर्व में फैलने लगी। उस दिन कोई भी दाना चुगने बाहर नहीं गया। वे रह-रह कर उल्लू दादा के कोटर की तरफ देखतीं लेकिन आज तो उल्लू दादा अभी से अन्दर घुस गये थे। सांप भी आज सुबह की सैर के लिए नहीं निकला था।

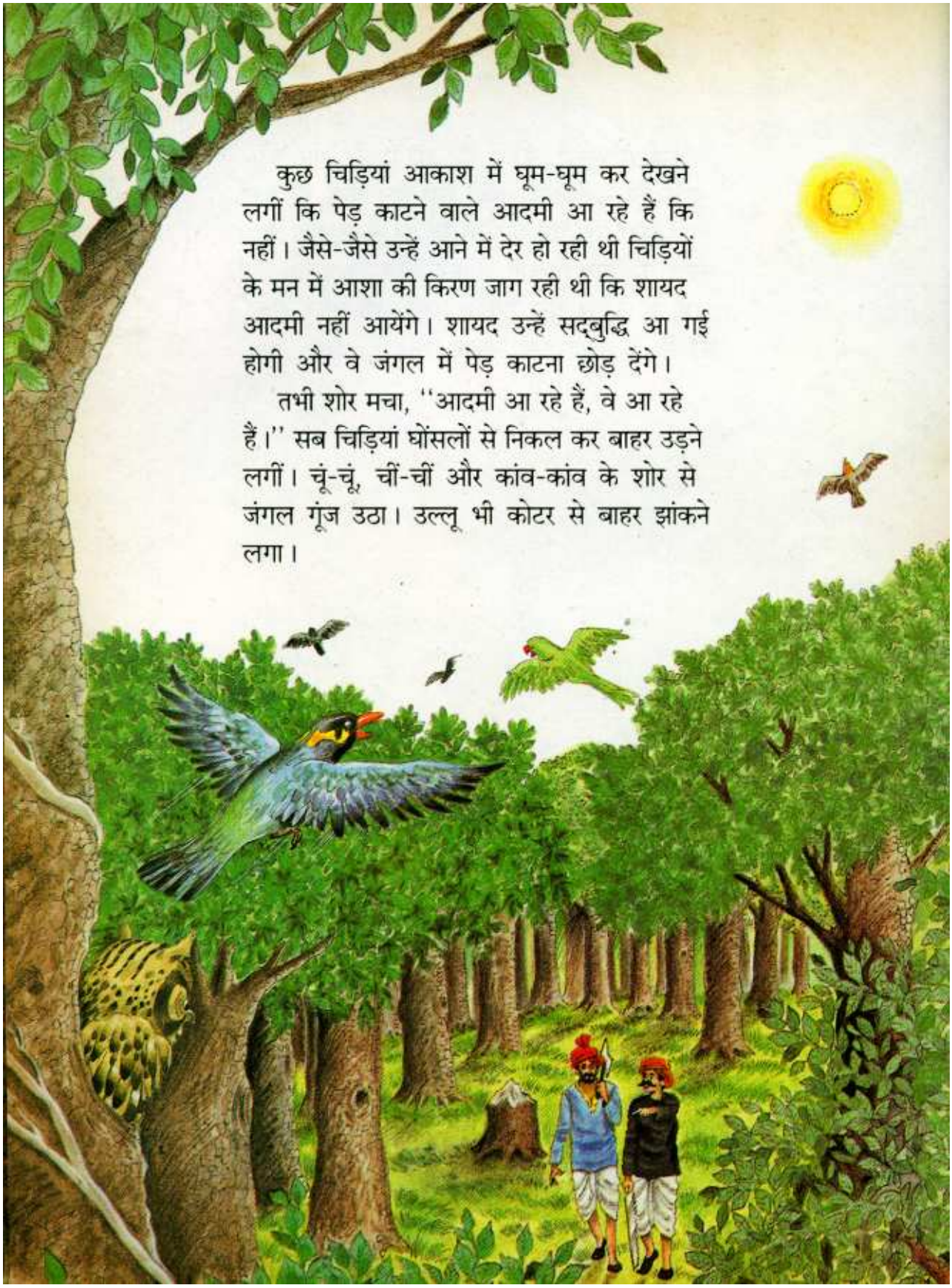

कुछ चिड़ियां आकाश में घूम-घूम कर देखने लगीं कि पेड़ काटने वाले आदमी आ रहे हैं कि नहीं। जैसे-जैसे उन्हें आने में देर हो रही थी चिड़ियों के मन में आशा की किरण जाग रही थी कि शायद आदमी नहीं आयेंगे। शायद उन्हें सद्‌बुद्धि आ गई होगी और वे जंगल में पेड़ काटना छोड़ देंगे।

तभी शोर मचा, ''आदमी आ रहे हैं, वे आ रहे हैं।'' सब चिड़ियां घोंसलों से निकल कर बाहर उड़ने लगीं। चूं-चूं, चीं-चीं और कांव-कांव के शोर से जंगल गूंज उठा। उल्लू भी कोटर से बाहर झांकने लगा।

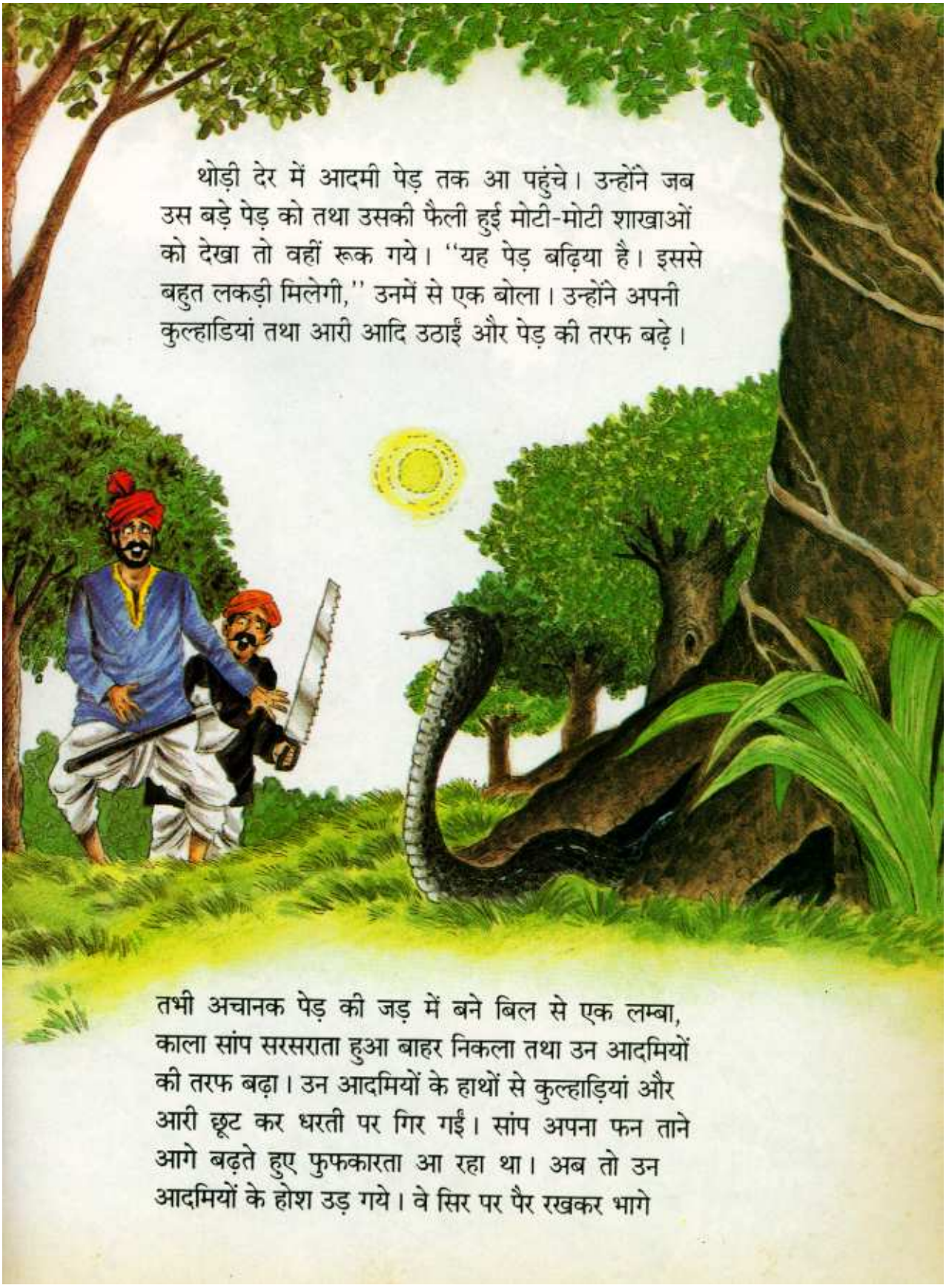

थोड़ी देर में आदमी पेड़ तक आ पहुंचे। उन्होंने जब उस बड़े पेड़ को तथा उसकी फैली हुई मोटी-मोटी शाखाओं को देखा तो वहीं रूक गये। "यह पेड़ बढ़िया है। इससे बहुत लकड़ी मिलेगी," उनमें से एक बोला। उन्होंने अपनी कुल्हाडियां तथा आरी आदि उठाईं और पेड़ की तरफ बढ़े।

तभी अचानक पेड़ की जड़ में बने बिल से एक लम्बा, काला सांप सरसराता हुआ बाहर निकला तथा उन आदमियों की तरफ बढ़ा। उन आदमियों के हाथों से कुल्हाड़ियां और आरी छूट कर धरती पर गिर गईं। सांप अपना फन ताने आगे बढ़ते हुए फुफकारता आ रहा था। अब तो उन आदमियों के होश उड़ गये। वे सिर पर पैर रखकर भागे

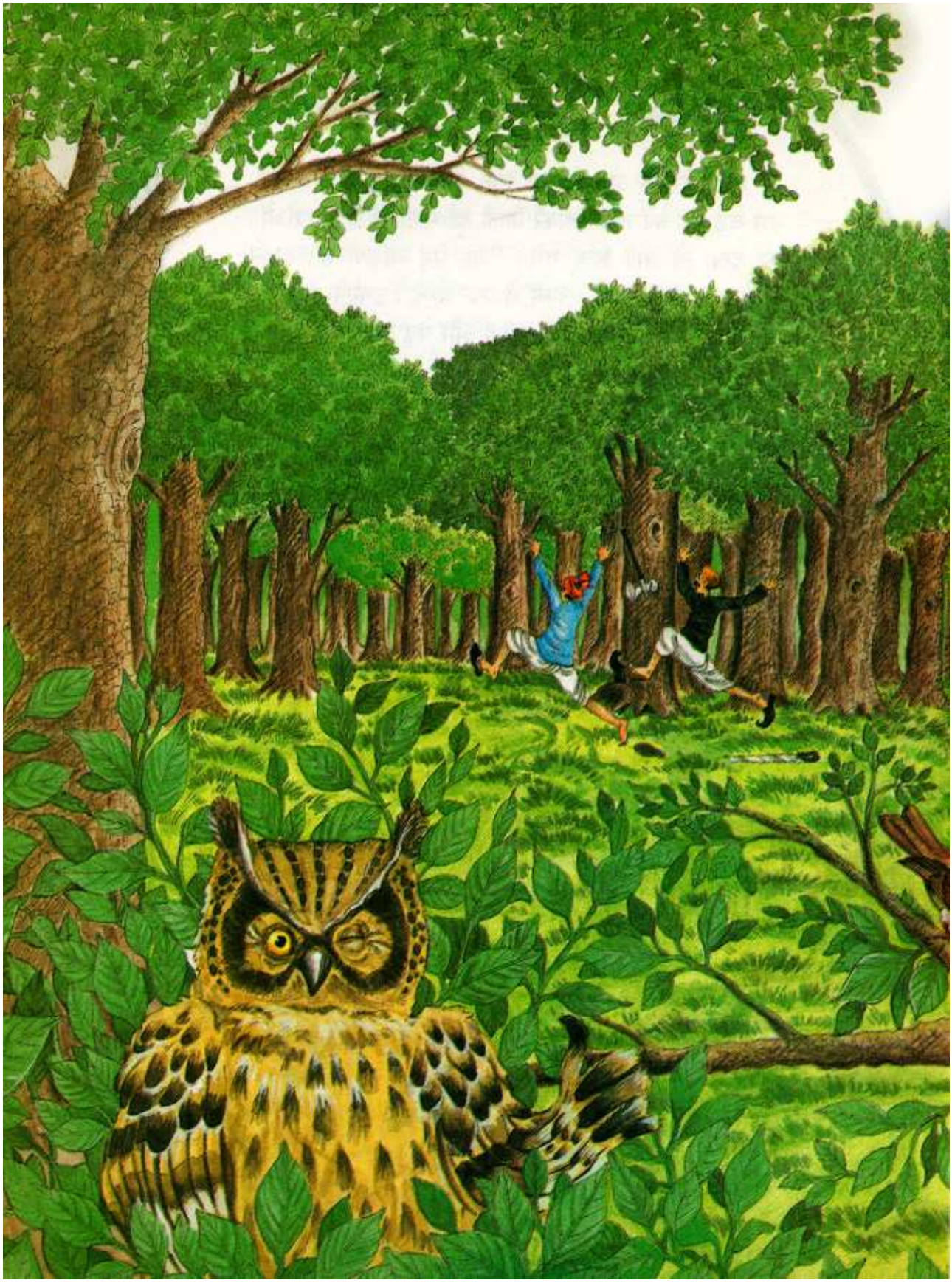

चिड़ियों ने जब उन आदमियों को भागते हुए देखा तो मारे खुशी के पागल होने लगीं। चूं-चूं, चीं-चीं तथा कांव-कावं के शोर से उन्होंने जंगल सिर पर उठा लिया। उल्लू दादा चुपचाप मुस्करा रहा था। जब आदमी बहुत दूर निकल गये तब सांप चुपचाप अपने बिल की तरफ चल दिया।

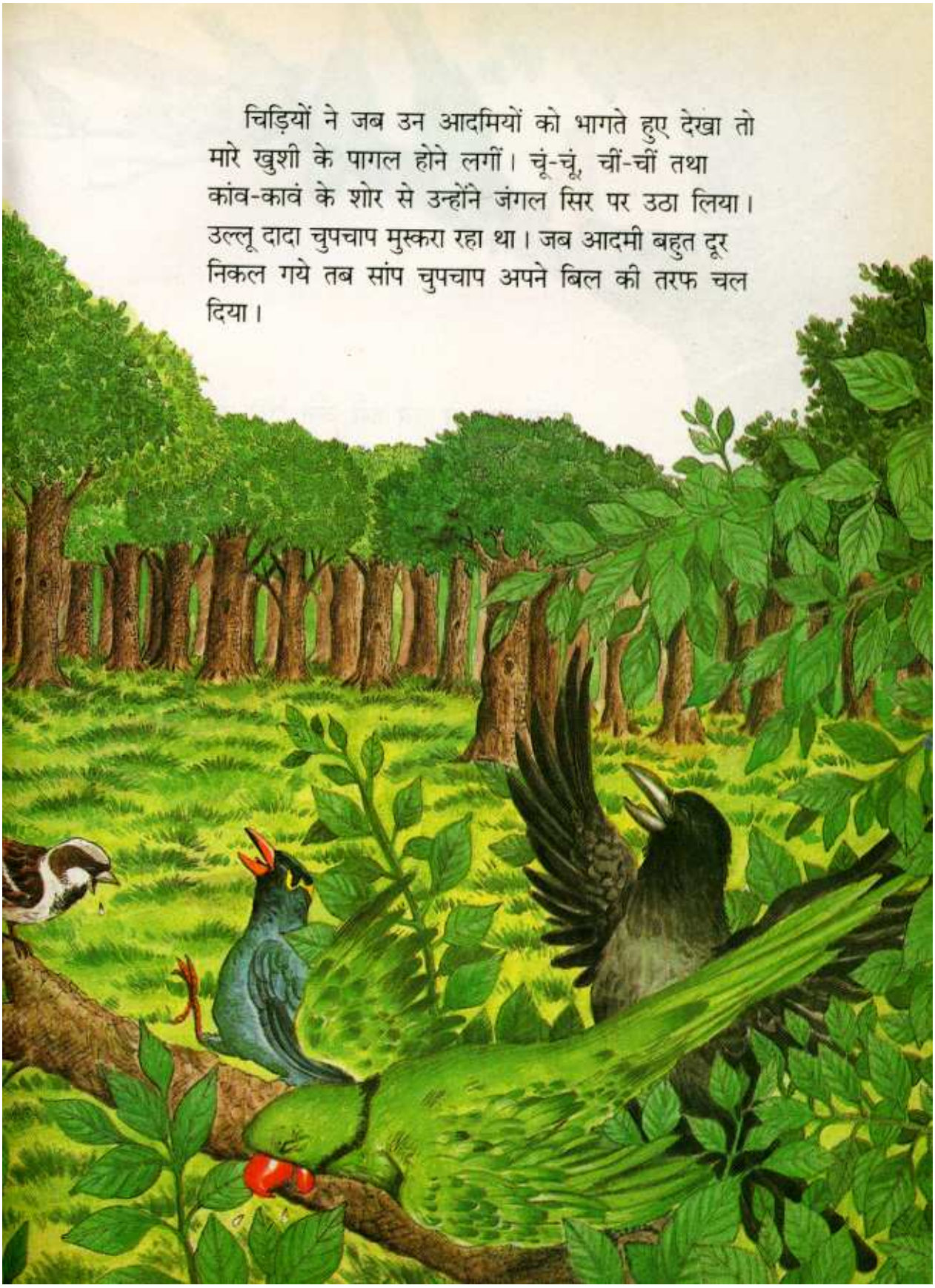

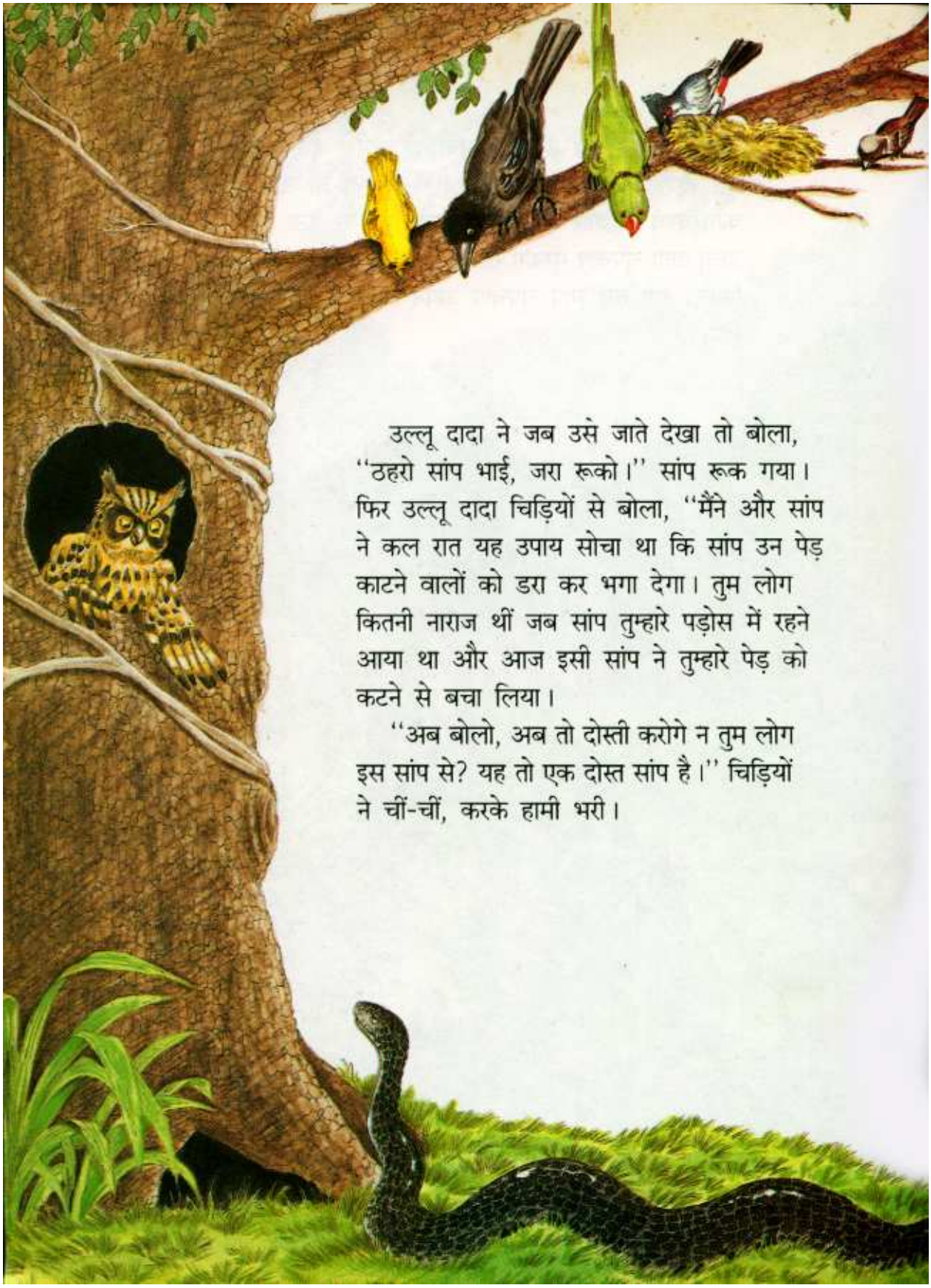

उल्लू दादा ने जब उसे जाते देखा तो बोला, "ठहरो सांप भाई, जरा रूको।" सांप रूक गया। फिर उल्लू दादा चिड़ियों से बोला, "मैंने और सांप ने कल रात यह उपाय सोचा था कि सांप उन पेड़ काटने वालों को डरा कर भगा देगा। तुम लोग कितनी नाराज थीं जब सांप तुम्हारे पड़ोस में रहने आया था और आज इसी सांप ने तुम्हारे पेड़ को कटने से बचा लिया।

"अब बोलो, अब तो दोस्ती करोगे न तुम लोग इस सांप से? यह तो एक दोस्त सांप है।" चिड़ियों ने चीं-चीं, करके हामी भरी।